

हृ	(हरण किया)	हतः	हता	हतम्
भू	(होना)	भूतः	भूता	भूतम्
लभ्	(पाया)	लब्धः	लब्धा	लब्धम्

### घातु

### अर्थ

### कृत प्रत्यय

### कृतवतु

आस्	(बैठना)	आसितः	आसितवान्
पत्	(गिरना)	पतितः	पतितवान्
चल्	(चलना)	चलितः	चलितवान्
पा	(पीना)	पीतः	पीतवान्
स्था	(बैठना)	स्थितः	स्थितवान्
ज्ञा	(जानना)	ज्ञातः	ज्ञातवान्
घ्रा	(सूँघना)	घ्रातः	घ्रातवान्
वस्	(रहना)	उषितः	उषितवान्
वद्	(ले जाना)	ऊढः	ऊढवान्
त्यज्	(त्यागना)	त्यक्तः	त्यक्तवान्
नम	(इनुकना)	नतः	नतवान्
जप्	(जप करना)	जपितः	जपितवान्
इष्	(इच्छा करना)	इष्टः	इष्टवान्
दृश्	(देखना)	दृष्टः	दृष्टवान्
क्री	(खरीदना)	क्रीतः	क्रीतवान्
गृह्	(गृहण करना)	गृहीतः	गृहीतवान्
पूज्	(पूजा करना)	पूजितः	पूजितवान्
कथ्	(कहना)	कथितः	कथितवान्
चुर	(चुराना)	चोरितः	चोरितवान्
जीव्	(जीना)	जीवितः	जीवितवान्
स्पर्श	(हूना)	स्पृष्टः	स्पृष्टवान्
सेव्	(सेवा करना)	सेवितः	सेवितवान्
शी	(सोना)	शायितः	शायितवान्



स्मृ	( स्मरण करना )	स्मृतः	स्मृतवान्
रक्ष्	( रक्षा करना )	रक्षितः	रक्षितवान्
श्रु	( सुनना )	श्रुतः	श्रुतवान्
पक्व	( पकाना )	पक्वः	पक्ववान्
पृच्छ	( पूछना )	पृष्ठः	पृष्ठवान्
हन्	( मारना )	हतः	हतवान्
हृ	( हरण करना )	हृतः	हृतवान्
सहृ	( सहना )	सोढः	सोढवान्
लिख्	( लिखना )	लिखितः	लिखितवान्
मुच	( छोड़ना )	मुक्तः	मुक्तवान्
चिन्त	( चिन्तन करना )	चिन्तितः	चिन्तितवान्
रम्	( रमना )	रतः	रतवान्
नी	( ले जाना )	नीतः	नीतवान्
मृ	( मरना )	मृतः	मृतवान्
वद	( बोलना )	वदितः	वदितवान्
वच्	( कहना )	उक्तः	उक्तवान्

### 3- शतृ प्रत्ययः

इस प्रत्यय का प्रयोग परस्मैवादी धातुओं के लट् लकार ( वर्तमान काल के स्थान पर होता है ) पुल्लिङ्ग में पठत् के तुल्य , स्त्रीलिङ्ग में ' ई ' लगाकर नदी के समान और नपुसङ्ग लिङ्ग में जगत् के समान रूप चलेगें । यहाँ केवल पुल्लिङ्ग के रूपों को दिया जा रहा है । -

### शतृ प्रत्यय

अद्	( खाना )	अयन्
अर्च	( पूजा करना )	अर्चन्

स्मृ	(स्मरण करना)	स्मृतः	स्मृतवान्
रक्ष्	(रक्षा करना)	रक्षितः	रक्षितवान्
श्रु	(सुनना)	श्रुतः	श्रुतवान्
पक्व	(पकाना)	पक्वः	पक्ववान्
पृच्छ्	(पूछना)	पृष्ठः	पृष्ठवान्
हन्	(मारना)	हतः	हतवान्
हृ	(हरण करना)	हृतः	हृतवान्
सह्	(सहना)	सोढः	सोढवान्
लिख्	(लिखना)	लिखितः	लिखितवान्
मुच्	(ढोड़ना)	मुक्तः	मुक्तवान्
चिन्त	(चिन्तन करना)	चिन्तितः	चिन्तितवान्
रम्	(रमना)	रतः	रतवान्
नी	(लौ जाना)	नीतः	नीतवान्
मृ	(मरना)	मृतः	मृतवान्
वद्	(बोलना)	वदितः	वदितवान्
वक्त्र	(कहना)	उक्तः	उक्तवान्

### ३- शतृ प्रत्ययः

इस प्रत्यय का प्रयोग परस्मैवादी धातुओं के लट् लकार (वर्तमान काल के स्थान पर होता है) पुल्लिङ्ग में पठत् के तुल्य, स्त्रीलिङ्ग में 'ई' लगाकर नदी के समान और नपुसङ्ग लिङ्ग में जगत् के समान रूप चलैगें। यहाँ केवल पुल्लिङ्ग के रूपों को दिया जा रहा है।-

### शतृ प्रत्यय

अद्	(खाना)	अदन्
अर्च	(पूजा करना)	अर्चन्

क्षिप्  
गण्  
गम्  
घ्रा  
चि  
धाव्  
पठ्  
पा  
पृच्छ्  
रक्ष  
वद्  
शक्

( फेंकना )

( गिनना )

( जाना )

( सुंघना )

( चुनना )

( दौड़ना )

( पढ़ना )

( पीना )

( पृछना )

( रक्षा करना )

( बोलना )

( समर्प होना )

क्षिपन्

गणयन्

गच्छन्

जिघ्रन्

चिन्वन्

धावन्

पठन्

पिबन्

पृच्छन्

रक्षन्

वदन्

शक्नुवन्



#### ५. शानच् प्रत्ययः

आत्मनेपदी धातुओं के लट् के स्थान पर शानच् होता है, उभयपदी धातुओं से शतृ एवं शानच् दोनों प्रत्यय होते हैं। शानच् का 'आन' शेष रहता है। यहाँ पुल्लिङ्ग के रूप दिख जा रहे हैं -

धातु

उर्ध्व

प्रत्यययुक्त शब्दः

कम्प्

( कंप्ना )

कम्पमानः

द्युत

( चमकना )

द्योतमानः

पलाय

( भागना )

पलायमानः

भास

( चमकना )

भासमानः

मृ

( मरना )

म्रियमानः

मान्

( माँगना )

मानमानः

लभ्

( प्राप्त करना )

लभमानः

शुन्

( शौक करना )

शौचमानः

सेव्  
भिक्ष  
पत्र  
यज्

( सेवा करना )  
( भीख माँगना )  
( पढ़ाना )  
( यज्ञ करना )

सेवमानः ५३  
भिक्षमानः  
पत्रमानः  
यजमानः

### 5. तुमुन् प्रत्ययः

इस प्रत्यय का प्रयोग 'को', के लिए अर्च में होता है,  
'तुमुन्' का 'तुम' शेष रहता है । तुमुन् प्रत्ययान्त अव्यय  
होता है ।

धातु

अर्थ

तुमन् शब्द

अद्

( खाना )

अतुम्

अर्च

( पूजा करना )

अर्चितुम्

कम्

( इच्छा करना )

कमितुम्

कृ

( करना )

कृत्तुम्

क्रन्द

( चिल्लाना )

क्रन्दितुम्

क्षिप्

( फेंकना )

क्षेप्तुम्

ख्याद्

( खाना )

ख्यादितुम्

गण्

( गिनना )

गणमितुम्

गाम्

( जाना )

गान्तुम्

गा

( गाना )

गातुम्

गृह्

( गृहण करना )

गृहीतुम्

घ्रा

( सूँघना )

घ्रातुम्

चल

( चलना )

चलितुम्

चि

( चुनना )

चेतुम्

चिन्त

( सोचना )

चिन्तयितुम्

जप्

( जपना )

जपितुम्

जि

( जीतना )

जेतुम्



त्यज्

दा

पच्

पठ्

श्रु

स्ना

हस्

हन्

( त्यागना )

( देना )

( पचाना )

( पढ़ना )

( सुनना )

( स्नान करना )

( हँसना )

( मारना )

त्युक्तम्

दानम्

पक्तुम्

पाठितुम्

श्रौतुम्

स्नान्तुम्

हसितुम्

हन्तुम्



### 6. क्त्वा 7. ल्यप्

इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग 'कर' या 'करके' अर्थ में होता है। क्त्वा का 'त्वा' और 'ल्यप्' का 'य' शेष रहता है। धातु से पूर्व उपसर्ग आदि होगा तो 'ल्यप्' प्रत्यय का प्रयोग होता है और पूर्व उपसर्ग के अभाव में 'क्त्वा' प्रत्यय होता है। दोनों प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं। अतः इनके रूप में नहीं चलते हैं।

धातु

अर्थ

क्त्वा प्रत्ययान्त

ल्यप् प्रत्ययान्त

अर्च

( पूजा करना )

अर्चित्वा

समर्चय

भू

( होना )

भूत्वा

सम्भूय

आप्

( प्राप्त होना )

आप्तत्वा

प्राप्य

कृ

( करना )

कृत्वा

उपकृत्य

क्षिप्

( फेंकना )

क्षिप्तत्वा

प्रक्षिप्य

गम

( जाना )

गतत्वा

आगत्य

गृह्

( गृहण करना )

गृहीत्वा

संगृह्य

चल्

( चलना )

चलित्वा

प्रचल्य

चिन्त्

( सोचना )

चिन्तयित्वा

संचिन्त्य

जि

( जीतना )

जित्वा

विजित्य



त्यज्	( त्यागना )	त्यक्त्वा	परित्यज्य <sup>51</sup>
दा	( देना )	दत्त्वा	आदाम
जी	( ले जाना )	नीत्वा	जानीय
पन्	( पकाना )	पक्त्वा	संपन्
पठ्	( पढ़ना )	पठित्वा	संपठम्
पूज	( पूजा करना )	पूजयित्वा	संपूज्य
बू	( बोलना )	उक्त्वा	प्रोच्य
युज्	( जोड़ना )	युक्त्वा	प्रयुज्य
स्व्	( रचना )	स्वयित्वा	विरचय्य
लिख्	( लिखना )	लिखित्वा	आलिख्य
श्रु	( सुनना )	श्रुत्वा	संश्रुत्य
स्तु	( स्तुति करना )	स्तुत्वा	प्रस्तुत्य
दृश्	( देखना )	दृशित्वा	विदृश्य

— X —



DEEPAK SINGH RAJPOOT

संस्कृत में वाक्य की क्रियाएं तीन वाच्यों में होती हैं -

कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

संस्कृत धातुओं की क्रिया दो वाक्यों में - कर्तृवाच्य एवं कर्मवाच्य में होती है।

1. कर्तृवाच्य → इसमें कर्ता से प्रथमा तथा कर्म में द्वितीया-विभक्ति होती है; जैसे - देवदत्तः ग्रामं गच्छति। रमा ग्रन्थं पठति।

2. कर्मवाच्य → इसमें कर्म से प्रथमा तथा कर्ता में तृतीया-विभक्ति होती है। इन दोनों वाच्यों में क्रिया प्रथमान्त पद के अनुसार होती है, जैसे - देवदत्तेन ग्रामः गम्यते। रमया ग्रन्थाः पठ्यन्ते।



3. भाववाच्य → इसमें कर्ता से तृतीया विभक्ति होती है तथा क्रिया आत्मनेपदी प्रथम पुरुष रुक्वन्त की ही होती है; जैसे - देवदत्तेन हस्यते। शिशुना रुदयते।

DEEPAK SINGH RAJPOOT

कर्तृवाच्य में कर्मवाच्य में बदलते समय प्रथमान्त कर्ता में तृतीया विभक्ति लगाना चाहिए तथा द्वितीयान्त कर्म में प्रथम विभक्ति होती है; जैसे -

\* देवदत्तः ग्रामं गच्छति → देवदत्तेन ग्रामः गम्यते।

\* सीता ग्रन्थं पठति → सीतया ग्रन्थः पठ्यते।

कर्तृवाच्य में भाववाच्य में बदलने के लिए प्रथमान्त कर्ता में तृतीया-विभक्ति और क्रिया आत्मनेपदी लगाना चाहिए -  
जैसे \* कर्तृवाच्य → कर्मवाच्य \* देवदत्त हसति → देवदत्तेन हस्यते।





एक	1	एकम्
दो	2	द्वे
तीन	3	त्रीणि
चार	4	चत्वारि
पाँच	5	पञ्च
छह	6	षड्
सात	7	सप्त
आठ	8	अष्ट
नौ	9	नव
दस	10	दश
ग्यारह	11	एकादश
बारह	12	द्वादश
तेरह	13	त्रयोदश
चौदह	14	चतुर्दश
पन्द्रह	15	पञ्चदश
सोलह	16	षोडश
सत्रह	17	सप्तदश
अठारह	18	अष्टादश
उन्नीस	19	एकविंशतिः
बीस	20	विंशतिः
इक्कीस	21	एकविंशतिः
बाईस	22	द्वाविंशतिः
तेईस	23	त्रयोविंशतिः
चौबीस	24	चतुर्विंशतिः
पच्चीस	25	पञ्चविंशतिः
हट्बीस	26	षड्विंशतिः
सत्ताईस	27	सप्तविंशतिः
अट्ठाईस	28	अष्टाविंशतिः

उन्तीस	२९	29	→ नवविंशतिः 54
तीस	३०	30	→ त्रिंशत्
इकतीस	३१	31	→ एकत्रिंशत्
बत्तीस	३२	32	→ द्वात्रिंशत्
तैंतीस	३३	33	→ त्रयस्त्रिंशत्
चौतीस	३४	34	→ चतुस्त्रिंशत्
पैंतीस	३५	35	→ पञ्चत्रिंशत्
छत्तीस	३६	36	→ षट्त्रिंशत्
सैंतीस	३७	37	→ सप्तत्रिंशत्
अड़तीस	३८	38	→ अष्टात्रिंशत्
उन्तालीस	३९	39	→ नवत्रिंशत् / उनचत्वारिंशत्
चालीस	४०	40	→ चत्वारिंशत्
एकतालीस	४१	41	→ एकचत्वारिंशत्
बयालीस	४२	42	→ द्वाचत्वारिंशत्
तैंतालीस	४३	43	→ त्रयश्चत्वारिंशत् / त्रिचत्वारिंशत्
चवालीस	४४	44	→ चतुश्चत्वारिंशत्
पैंतालीस	४५	45	→ पञ्चचत्वारिंशत्
छियालीस	४६	46	→ षट्चत्वारिंशत्
सैंतालीस	४७	47	→ सप्तचत्वारिंशत्
अड़तालीस	४८	48	→ अष्टाचत्वारिंशत्
उनचास	४९	49	→ नवचत्वारिंशत्
पचास	५०	50	→ पञ्चाशत्

⇒ एक सौ पाँच तक की संख्याएँ पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग में होती हैं।

⇒ पु. स्त्री. नपु.

एकः	एका	एकम्
द्वौ	द्वे	द्वे
त्रयः	त्रिस्तः	त्रीणि
चत्वारः	चतस्तः	चत्वारि
पञ्च	पञ्च	पञ्च

19 - उनविंशति / नवदश / एकौनविशतिः

39 - नवत्रिंशत् / उनचत्वारिंशत्

43 - त्रयश्चत्वारिंशत् / त्रिचत्वारिंशत्

49 - नवचत्वारिंशत् / ऊनपञ्चाशत्

( शब्द प्रकार, वचन व विभक्ति का ज्ञान )

**शब्द** → शब्द वर्णों के सार्थक संयोग से शब्द बनते हैं।

जैसे- न् + अ - र् + अ = (मनुष्य) व्याकरण में सार्थक शब्दों पर ही विचार किया जाता है।

शब्दों में संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण होते हैं। प्रत्येक विभक्ति के तीनों वचनों के लिए अलग-अलग निह्न होते हैं। इन्हें प्रत्यय कहते हैं।

संस्कृत भाषा में कारक को बताने के लिए जो प्रत्यय जुड़ते हैं, उन्हें विभक्ति कहते हैं।

① कर्ता कारक

② कर्म कारक

③ करण कारक

④ सम्प्रदान कारक

⑤ अपादान कारक

⑥ सम्बन्ध कारक

⑦ अधिकरण कारक

⑧ सम्बोधन कारक

⇒ शब्द रूप 5 प्रकार के होते हैं - ① संज्ञा ② सर्वनाम

③ विशेषण ④ अव्यय ⑤ क्रिया

⇒ संज्ञाएं 6 प्रकार की होती हैं -

① स्वरान्त (अजन्त) पुल्लिङ्ग

② स्वरान्त (अजन्त) स्त्रीलिङ्ग

③ स्वरान्त (अजन्त) नपुंसकलिङ्ग

④ हलन्त (व्यञ्जनान्त) पुल्लिङ्ग

⑤ हलन्त (व्यञ्जनान्त) स्त्रीलिङ्ग

⑥ हलन्त (व्यञ्जनान्त) नपुंसकलिङ्ग।

इन सबके रूप तीनों वचनों (एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन) और सातों विभक्तियों (प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी,



पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी) में बदलते हैं। सम्बोधन प्रथमा से भिन्न नहीं है। रूप में अन्तर केवल एकवचन में होता है।

### कारक

जिन पदों का क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध होता है, उन्हें हम कारक कहते हैं। वहाँ 6 प्रकार के होते हैं।

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।  
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट् ॥

कारक	विभक्ति	विभक्ति-चिह्न
कर्ता	→ प्रथमा	→ ने
कर्म	→ द्वितीया	→ को
करण	→ तृतीया	→ से, के द्वारा
सम्प्रदान	→ चतुर्थी	→ के लिए
अपादान	→ पञ्चमी	→ से (अलग होना)
सम्बन्ध	→ षष्ठी	→ का, के, की
अधिकरण	→ सप्तमी	→ में, पे, पर
सम्बोधन	→ प्रथमा	→ हे! अरे! भो!

⇒ हिन्दी में कारकों की संख्या 8 है किन्तु संस्कृत में इनमें से 6 को ही कारक कहा जाता है। सम्बन्ध (षष्ठी) को कारक नहीं माना जाता है।

⇒ कारकों में सम्बन्ध (षष्ठी विभक्ति) और सम्बोधन (प्रथम विभक्ति) की गणना नहीं की जाती है।



राम (अकारान्त पुल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः।

नोट → 'राम' शब्द की तरह ही पुरुष, अश्व, सिंह तथा वानर शब्दों के भी रूप चलते हैं।

उकारान्त पुल्लिङ्ग एकवचन (भानु)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पंचमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानो	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः।

अन्य उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द - कशानु (आग), प्रभु

(स्वामी), विद्यु (चन्द्रमा), परशु

(मृत्यु), पाशु (धूला), वामु (हवा), पशु (पशु), तरु (वृक्ष)  
इषु (गन्ना) आदि।



## अस्मद् (मैं)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पञ्चमी	मत	आवाभ्याम्	अस्मत
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

## युष्मद् (तुम)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यं	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

## सर्वनाम सर्व (पुल्लिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वो	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वो	सर्वानि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु



## सर्व (स्त्रीलिङ्ग)

प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वभ्याम्	सर्वभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वभ्याम्	सर्वभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वसाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वसु

## सर्व (नपुंसकलिङ्ग)

प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेष रूप पुंलिङ्ग के समान

— X —

DEEPAK SINGH RAJPOOT